PAPER - 3, UNIT- 2

Characteristics of Indian Agriculture

कृषि भारतीय अर्थव्यवस्था तथा सामाजिक - सांस्कृतिक स्वरूप की आधारशिला है। देश का यह प्राचीन व्यवसाय है। भारतीय किसान अतीत में कृषि पंडित के रूप में विख्यात था, वर्तमान समय में कृषि का विज्ञानीकरण हो गया, लेकिन भारतीय किसान अभी तक पूरी तरह इन नई तकनीकों व ज्ञान का लाभ नहीं उठा सका है। धीरे-धीरे इस दिशा में कार्य हो रहा है। कृषि का महत्व इसकी निम्न विशेषताओं के कारण आँका जा सकता है।

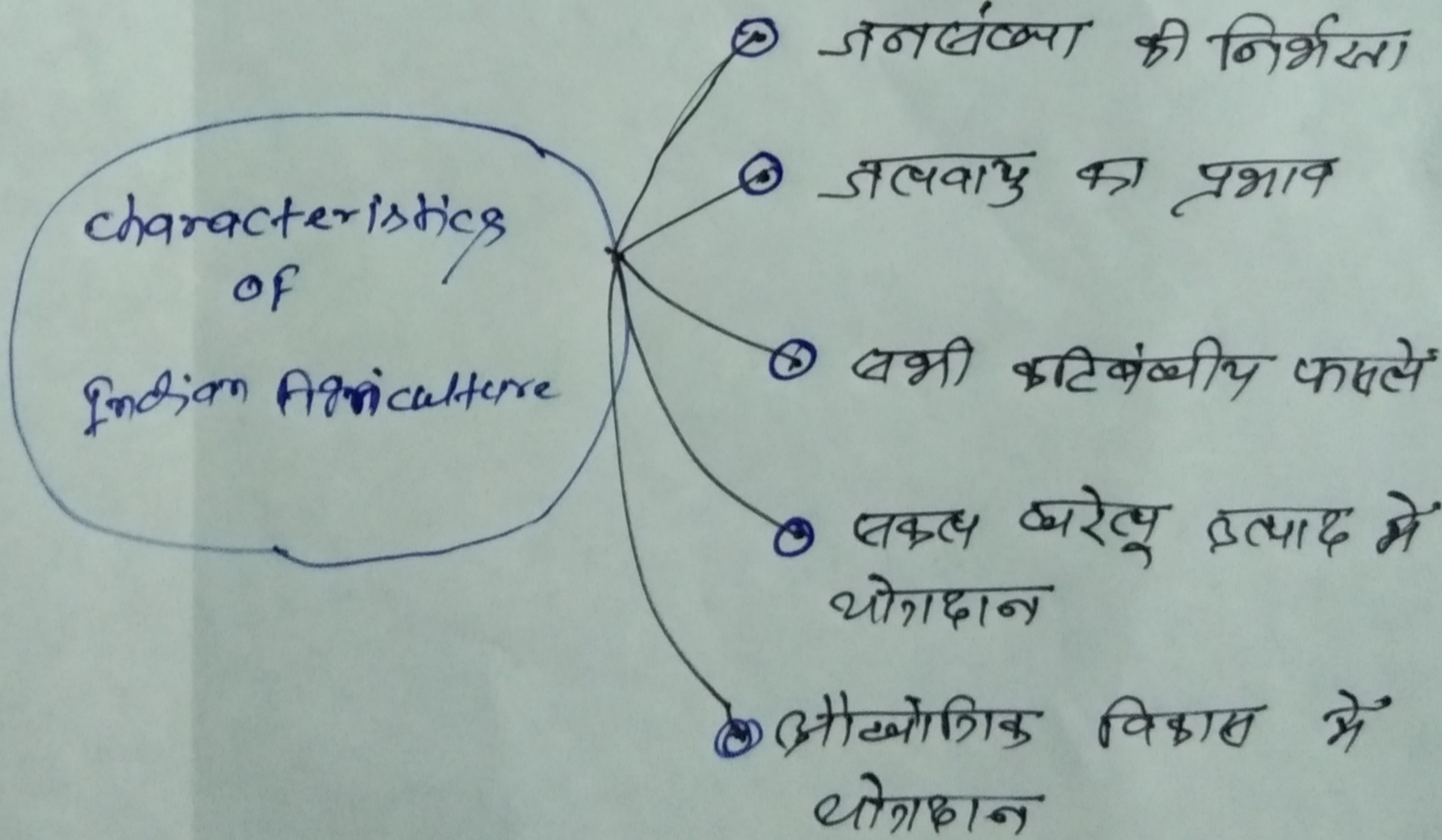

Characteristics of Indian Agriculture

- विदेशी व्यापार में योगदान
- खाद्यान्नों की प्रधानता
- कृषि उत्पादन में वृद्धि
- खाद्यान्न उत्पादनों में वृद्धि
- कृषि योग्य भूमि का प्रतिशत
- सिंचित भूमि
- रबी, खरीफ एवं जायद फसलें
- प्रति व्यक्ति कृषि योग्य भूमि का औसत
- कृषि करने का पुराना तरीका
- चारे की फसलें
- कृषि प्रतें
- खाद्यान्न उत्पादन क्षेत्र में वृद्धि
- खाद्यान्न उत्पादकता में उल्लेखनीय वृद्धि

⊙ जनसंख्या की निर्भरता :-

भारत की जनसंख्या अपनी आजीविका के लिए कृषि पर प्रत्यक्ष रूप से निर्भर करती है। इसके अलावा अनेक लोग कृषि पदार्थों का विनिमय करके अपनी जीविका कमाते हैं।

⊙ जलवायु का प्रभाव :-

हमारे देश की जलवायु वर्ष भर कृषि उत्पादन के अनुकूल रहती है। जलवायु का सबसे महत्वपूर्ण तत्व तापमान इस दिशा मे पर्याप्त योगदान प्रदान करता है।

⊙ सभी कटिबंधीय फसलें :-

भारत मे सभी प्रकार की फसलें उगाई जाती हैं। जिनमें उष्ण, उपोष्ण व शीतोष्ण आदि सभी फसलें शामिल हैं।

⊙ सकल घरेलू उत्पाद में योगदान :- भारत के सकल घरेलू उत्पाद में कृषि का योगदान काफी अधिक है, क्योंकि द्वितीयक व तृतीय क्षेत्र का योगदान बढ़ रहा है।

⊙ औद्योगिक विकास मे योगदान :-

भारत के प्रमुख उद्योग कृषि से प्राप्त कच्चे माल पर आधारित हैं। चीनी, सूत, सूती वस्त्र, वनस्पति व बागान उद्योग प्रत्यक्ष रूप से कृषि पर निर्भर हैं। अनेक लघु व कुटीर उद्योगों को भी कृषि से ही कच्चा माल प्राप्त होता है।

⊙ खाद्यान्नों की प्रधानता :- भारत की कृषि मे खाद्यान्नों का प्राधान्य रहता है। यहाँ पर कुल कृषित कृषि के 75% भाग पर खाद्यान्न फसलें उगायी जाती है। तथा शेष 25% भाग पर व्यापारिक फसलों का उत्पादन किया जाता है

⊙ कृषि उत्पादन मे वृद्धि :- भारत में कृषि - उत्पादन पिछले 40 वर्षों मे 250 प्रतिशत बढ़ा है जबकि चीन मे इस दौरान कृषि उत्पादन मे 80% की वृद्धि हुई है।

⊙ खाद्यान्न उत्पादनों मे वृद्धि :- स्वतंत्रता के बाद से भारत मे खाद्यान्न उत्पादन मे भारी प्रगति हुई है। यहाँ पर उत्पादन पिछले 50 वर्षों मे लगातार दो गुना बढ़ गया है। भारत वर्तमान समय मे खाद्यान्न के मामले मे न केवल आत्मनिर्भर हो गया है, बल्कि वह निर्यात करने की स्थिति मे भी आ गया है।

⊙ सिंचित भूमि :- भारत, चीन के बाद विश्व का सबसे बड़ा सिंचित देश है। यहाँ पर कुल कृषित भूमि का 37.5% भाग सींचा जाता है। शेष कृषित भूमि वर्षा पर निर्भर करती है।

⑤ कृषि करने का पुराना तरीका :-

हमारे देश मे कृषि कार्य अभी भी पुराने ढंग से ही किया जाता है। ट्रैक्टरों आदि मशीनों का प्रयोग बहुत कम किया जाता है। क्योंकि भारतीय किसान निर्धन है। इसलिए वह अपने बैलों की जोड़ी से लकड़ी के हल द्वारा खेतों की जुताई करता है। वह खाद का भी प्रयोग कम करता है। इस प्रकार प्रति हैक्टेयर उत्पादन हमारे देश मे अन्य देशों की अपेक्षा कम होता है

⑥ चारे की फसलें :-

भारतीय कृषि मे चारे की फसलों का महत्व बहुत कम है। इस कारण कृषि के साथ पशुपालन के कार्य को बढ़ावा नहीं मिल सका है। देश की केवल 4.1 भूमि पर ही चारे की फसलों का उत्पादन किया जाता है

:0:

Dr. Mukul Kumar